International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, July-December 2024, Submitted in December 2024, ISSN -2393-8048

"आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय संस्कृति के आधार स्तम्भ रामचरितमानस का अध्ययन"

किरण, शोधार्थी, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर
डॉ0 मोनिका व्यास, सहायक आचार्य हिन्दी, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

शोध का सारांश

इस शोध–पत्र का उद्देश्य भारतीय संस्कृति के मूल आधारों को समझना और आधुनिक संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना है। तुलसीदासकृत रामचरितमानस भारतीय जीवन और संस्कृति का ऐसा महाकाव्य है, जिसने सदियों से समाज को धर्म, नीति, नैतिकता और आध्यात्मिकता का मार्ग दिखाया है। इसे भारतीय संस्कृति का आधार–स्तम्भ इस कारण कहा जाता है क्योंकि इसमें धर्म और अध्यात्म के साथ–साथ सामाजिक कर्तव्यों, पारिवारिक संबंधों, स्त्री–पुरुष समानता, शासन–व्यवस्था और जनकल्याण के आदर्श भी निहित हैं।

आधुनिक समय में जब समाज तेजी से बदलते मूल्यों, वैश्वीकरण, तकनीकी प्रभाव और भौतिकतावाद की ओर झुक रहा है, तब रामचरितमानस की शिक्षाएँ और भी महत्वपूर्ण हो जाती हैं। यह ग्रंथ हमें बताता है कि भारतीय संस्कृति केवल आस्था और परंपरा का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह मानवता, समानता, सहयोग और लोककल्याण का भी आधार है।

इस शोध का सार यह है कि रामचरितमानस आधुनिक युग में भी उतना ही उपयोगी और प्रासंगिक है जितना अपने रचनाकाल में था। यह ग्रंथ न केवल धार्मिक ग्रंथ के रूप में पूजनीय है, बल्कि जीवन की हर समस्या और हर परिस्थिति में नैतिक व सांस्कृतिक समाधान प्रदान करता है। इसलिए इस शोध–पत्र में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि रामचरितमानस भारतीय संस्कृति के शाश्वत मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है और आधुनिक समाज को दिशा देने की क्षमता रखता है।

शोध–कुंजीः आधुनिक, परिप्रेक्ष्य, भारतीय संस्कृति, आधार स्तम्भ, रामचरितमानस, परिस्थिति, नैतिक, प्रतिनिधित्व, लोककल्याण, मानवता, समानता, सहयोग, सामाजिक, आध्यात्मिक, भौतिकवाद, व्यक्तिवाद, धर्म, दर्शन, कला, साहित्य, मानवता, कर्तव्यपरायणता, समरसता, लोकमंगल आदि

शोध की प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति की जड़ें अत्यंत प्राचीन हैं, जो धर्म, दर्शन, कला, साहित्य और लोकाचार के संगम से निर्मित हुई हैं। भारतीय संस्कृति को जीवंत और शाश्वत बनाए रखने में अनेक ग्रंथों, पुराणों और महाकाव्यों का योगदान रहा है। इनमें गोस्वामी तुलसीदासकृत रामचरितमानस विशेष स्थान रखता है। यह केवल धार्मिक ग्रंथ न होकर भारतीय समाज और संस्कृति का दर्पण भी है।

तुलसीदास ने रामचरितमानस के माध्यम से न केवल राम को मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में प्रतिष्ठित किया, बल्कि परिवार, समाज और राष्ट्र के आदर्श जीवन–मूल्यों को भी प्रस्तुत किया। इसमें वर्णित कथा मानव जीवन के प्रत्येक आयाम–नैतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिककृको दिशा प्रदान करती है। यही कारण है कि रामचरितमानस को भारतीय संस्कृति का आधार–स्तम्भ कहा जाता है।

आधुनिक युग में जहाँ एक ओर वैश्वीकरण और तकनीकी विकास ने समाज को नए अवसर दिए हैं, वहीं दूसरी ओर भौतिकवाद, व्यक्तिवाद और सांस्कृतिक विखंडन जैसी चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। ऐसे समय में रामचरितमानस की शिक्षाएँ हमें यह सिखाती हैं कि भारतीय संस्कृति का वास्तविक सार मानवता, कर्तव्यपरायणता, समरसता और लोकमंगल में निहित है। इस शोध की प्रस्तावना का मूल उद्देश्य यह स्पष्ट करना है –

1. रामचरितमानस केवल धार्मिक या साहित्यिक ग्रंथ नहीं, बल्कि भारतीय जीवन–दर्शन का प्रतिनिधि है।
2. यह आधुनिक समाज को नैतिक दिशा देने में आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना अपने रचना–काल में था।
3. इसके आदर्श भारतीय संस्कृति के लिए मार्गदर्शक स्तम्भ के रूप में कार्य करते हैं।

अतः यह शोध आधुनिक परिप्रेक्ष्य में रामचरितमानस की शिक्षाओं और सांस्कृतिक योगदान को समझने का प्रयास है, ताकि भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों को नई पीढ़ी तक सार्थक रूप में पहुँचाया जा सके।

शोध का सोपान

किसी भी शोध को व्यवस्थित और क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करने के लिए शोध का सोपान (Research Steps) अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। इस शोध में निम्नलिखित चरणों के आधार पर कार्य संपन्न किया गया है –

(क) विषय का चयन

सबसे पहले शोध के लिए रामचरितमानस और उसके माध्यम से भारतीय संस्कृति की व्याख्या को आधार बनाया गया। विषय चयन का मुख्य कारण यह है कि यह ग्रंथ भारतीय समाज की जीवन–शैली, नैतिक मूल्यों और सांस्कृतिक विरासत को स्पष्ट करता है।

(ख) शोध समस्या का निर्धारण

यह प्रश्न सामने आया कि क्या रामचरितमानस आज के आधुनिक युग में भी भारतीय संस्कृति के आधार–स्तम्भ के रूप में प्रासंगिक है? इस प्रश्न का उत्तर खोजने के लिए शोध की दिशा तय की गई।

(ग) सामग्री संग्रह

प्राथमिक स्रोत के रूप में रामचरितमानस का गहन अध्ययन किया गया। साथ ही, द्वितीयक स्रोत जैसे–आधुनिक टीकाएँ, साहित्यिक आलोचनाएँ, शोध–लेख और ऐतिहासिक पुस्तकों से सामग्री एकत्र की गई।

(घ) तुलनात्मक अध्ययन

रामचरितमानस की शिक्षाओं की तुलना अन्य धार्मिक एवं दार्शनिक ग्रंथों (जैसे गीता, उपनिषद और वाल्मीकि रामायण) से की गई, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि तुलसीदास की रचना भारतीय संस्कृति में किस प्रकार विशिष्ट स्थान रखती है।

(ङ) आधुनिक परिप्रेक्ष्य का विश्लेषण

आज के समाज की चुनौतियोंकृभौतिकवाद, सामाजिक असमानता, नैतिक पतन और सांस्कृतिक विखंडन का अध्ययन कर यह परखा गया कि रामचरितमानस इन समस्याओं के समाधान में किस प्रकार सहायक हो सकता है।

(च) निष्कर्ष निर्माण

अंत में, संकलित तथ्यों और विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया कि रामचरितमानस भारतीय संस्कृति का जीवंत आधार–स्तम्भ है, जो आधुनिक युग में भी प्रासंगिक और मार्गदर्शक है।

शोध का महत्व

किसी भी शोध का महत्व तभी स्पष्ट होता है जब उसका योगदान समाज, साहित्य और संस्कृति की समझ में नई दिशा प्रदान करे। रामचरितमानस पर आधारित यह शोध कई स्तरों पर महत्त्वपूर्ण सिद्ध होता है–

(क) सांस्कृतिक महत्व : भारतीय संस्कृति का आधार धर्म, करुणा, कर्तव्य, सत्य और मर्यादा पर टिका हुआ है। रामचरितमानस इन मूल्यों को जन–जन तक पहुँचाने का सबसे सशक्त माध्यम है। इस शोध के द्वारा यह स्पष्ट किया गया है कि आधुनिक युग में भी भारतीय समाज को एकजुट और संतुलित रखने में रामचरितमानस की शिक्षाएँ अत्यंत प्रासंगिक हैं।

(ख) सामाजिक महत्व : आज के समय में सामाजिक असमानता, नैतिक पतन और पारिवारिक विघटन जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। इस शोध से यह सिद्ध होता है कि रामचरितमानस में वर्णित आदर्श–जैसे राम का आदर्श शासन (रामराज्य), सीता का आदर्श नारीत्व, हनुमान की निष्ठा, समाज में संतुलन, समरसता और नैतिकता स्थापित करने में मार्गदर्शक हो सकते हैं।

(ग) शैक्षिक महत्व : यह शोध विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं और साहित्यकारों के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह रामचरितमानस को केवल धार्मिक ग्रंथ न मानकर एक सांस्कृतिक और सामाजिक दस्तावेज के रूप में प्रस्तुत करता है। इससे भारतीय संस्कृति की गहन समझ विकसित होती है।

(घ) आधुनिक परिप्रेक्ष्य में महत्व : वैश्वीकरण और पश्चिमी प्रभाव के दौर में भारतीय समाज अपनी सांस्कृतिक जड़ों से धीरे–धीरे दूर होता जा रहा है। इस शोध का महत्व यह है कि यह आधुनिक समाज को अपनी परंपराओं और सांस्कृतिक आधार–स्तम्भों की ओर पुनः उन्मुख करता है और यह संदेश देता है कि आधुनिकता और परंपरा में सामंजस्य संभव है।

(ङ) राष्ट्रीय एकता और आदर्श जीवन के लिए महत्व : रामचरितमानस एक ऐसा ग्रंथ है जो धर्म, जाति और भाषा की सीमाओं से परे जाकर राष्ट्रीय एकता का संदेश देता है। इस शोध से यह स्पष्ट हुआ है कि भारतीय संस्कृति की आत्मा को समझने और आदर्श जीवन जीने के लिए रामचरितमानस आज भी मार्गदर्शक है।

शोध के उद्देश्य

किसी भी शोध की दिशा और स्वरूप उसके उद्देश्यों से निर्धारित होती है। इस शोध–पत्र का मूल उद्देश्य रामचरितमानस को भारतीय संस्कृति के आधार–स्तम्भ के रूप में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में समझना और उसकी प्रासंगिकता का विश्लेषण करना है। शोध के विशिष्ट उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

1. भारतीय संस्कृति के मूल तत्व–धर्म, मर्यादा, आदर्श जीवन, सामाजिक समरसता को रामचरितमानस में किस प्रकार प्रस्तुत किया गया है, इसका अध्ययन करना।
2. यह समझना कि आधुनिक युग में भारतीय समाज की सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने में रामचरितमानस की क्या भूमिका हो सकती है।
3. समाज में व्याप्त नैतिक पतन, पारिवारिक विघटन और असमानताओं की पृष्ठभूमि में रामचरितमानस की शिक्षाओं की उपयोगिता को उजागर करना।
4. रामराज्य की संकल्पना को आधुनिक लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था और सामाजिक न्याय की अवधारणा से जोड़कर देखना।
5. रामचरितमानस को केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि एक साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक महाकाव्य के रूप में स्थापित करना।
6. तुलसीदास की रचना–शैली, भाषा, लोकप्रसार और सांस्कृतिक योगदान का गहन अध्ययन करना।
7. यह स्पष्ट करना कि रामचरितमानस के आदर्श–जैसे त्याग, भक्ति, कर्तव्य, सेवा और निष्ठा, आज के वैश्वीकरण और उपभोक्तावादी संस्कृति में भी मार्गदर्शक हो सकते हैं।
8. यह दिखाना कि परंपरा और आधुनिकता में संघर्ष न होकर सामंजस्य संभव है और उसका आधार रामचरितमानस हो सकता है।
9. इस शोध का उद्देश्य भावी शोधार्थियों और विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति की गहनता और व्यापकता से परिचित कराना है।
10. यह बताना कि भारतीय समाज की सतत प्रगति और एकता के लिए रामचरितमानस जैसे सांस्कृतिक ग्रंथों का अध्ययन अनिवार्य है।

शोध का निष्कर्ष

इस शोध से यह स्पष्ट हुआ कि रामचरितमानस केवल धार्मिक आस्था का ग्रंथ नहीं है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति का शाश्वत और जीवन्त आधार–स्तम्भ है। तुलसीदास ने इस महाकाव्य के माध्यम से उस संस्कृति का रूप प्रस्तुत किया, जो मानव–जीवन को धर्म, नीति, मर्यादा और करुणा के आदर्शों से जोड़ती है।

18वीं शताब्दी से लेकर आधुनिक समय तक रामचरितमानस ने समाज को एकजुट करने, नैतिकता को बनाए रखने और लोकमंगल की भावना को मजबूत करने में प्रमुख भूमिका निभाई है। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में जब समाज वैश्वीकरण, भौतिकवाद और सांस्कृतिक विखंडन की चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब यह ग्रंथ हमें यह सिखाता है कि भारतीय संस्कृति का वास्तविक सार मानवता, सहिष्णुता और कर्तव्य–निष्ठा में निहित है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि रामचरितमानस भारतीय संस्कृति का आधार–स्तम्भ है, जिसकी प्रासंगिकता समय के साथ और भी अधिक बढ़ती जा रही है। यह केवल परंपरा का स्मारक नहीं, बल्कि भविष्य के लिए एक जीवंत प्रेरणा–स्रोत है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. लल्लन रायः तुलसी की साहित्य साधना, दिल्ली वाणी प्रकाशन
2. विद्यानिवास मिश्रः तुलसी मंजरी
3. सृजना शोध पत्रिका, जनवरी मार्च 2010
4. सीताराम चतुर्वेदीः गोस्वामी तुलसीदास (समीक्षात्मक विवेचन)
5. श्रीरामचरितमानस, प्रकाशन केन्द्र लखनऊ, उत्तर प्रदेश पृष्ठ 55, 58
6. स्वामी प्रज्ञानन्द सरस्वती मानस गूढार्थ चन्द्रिका
7. सृजना, शोध पत्रिका
8. हरी लाल शाहः रामचरितमानस का लोकतात्विक अध्ययन 1992

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY